International Journal of Applied Research 2015; 1(9): 111-113

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(9): 111-113
www.allresearchjournal.com
Received: 28-06-2015
Accepted: 30-07-2015

डॉ0 शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र

Correspondence:
डॉ0 शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र

प्रेमाख्यान परम्परा और पद्मावत

शिवदत्त शर्मा

प्रेमाख्यान परम्परा का स्मृद्ध इतिहास है।प्रेमाख्यान शब्द प्रेम और आख्यान दो शब्दों से बना है। आख्यान का शाब्दिक अर्थ है–कोई पुरातन वृत्तान्त अथवा कथानक। कहानी एवं पुराणों को भी आख्यान कहने की परम्परा रही है। हिन्दी साहित्य में प्रेमाख्यान का अर्थ है– प्राचीन कथा जो प्रेम पर आधारित हो। प्रेम शब्द का प्रयोग सूफियों ने एक विशेष अर्थ में किया है। सूफियों में लौकिक प्रेम द्वारा अलौकिक वर्णन की परम्परा रही है। अतः प्रेमाख्यान परम्परा में प्रेम का अर्थ लौकिक तथा अलौकिक प्रेम दोनों ही ग्रहण किया जाता है। [1]

सूफी अपने आराध्य को निराकार मानते हैं। अतःउसके प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति प्रकट रूप मे करना सम्भव नहीं है। वास्तव में सूफी कवियों नें निराकार ईश्वर को प्रेम से प्राप्त करने पर बल दिया है। इस उद्देश्य से सूफी कवियों ने प्रेम –कहानियों का सहारा लिया और अन्योक्ति तथा समासोक्ति द्वारा उस अलौकिक शक्ति को प्राप्त करने की बात कही है।

सूफी प्रेमाख्यान काव्य परम्परा का मूल तत्व क्या है इस विषय में अनेक विद्वानों के पृथक पृथक मत हैं। प्रमुख आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कथन महत्वपूर्ण है।उनका मत है कि सूफी कवियों ने जिन कहानियों को प्रेमाख्यान काव्यों का आधार बनाया है बे सब हिन्दुओं के घरों में बहुत दिनों से चली आ रहीं हैं। इन कहानियों में आवश्यकतानुसार कुछ परिवर्तन किया गया है। कहानियों का उत्स हिन्दुधर्म है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अतिरिक्त आयोध्या सिंह उपाध्याय डॉ श्याम सुन्दर दास ने भी स्वीकार किया है कि इन कहानियों की साहित्यिक परम्परा विद्यमान थी। कुछ विद्वान इससे सहमत नहीं हैं उनका कहना है कि इन कहानियों की साहित्यिक परम्परा नहीं थी तथा ये कहानियां लोकप्रचलित थीं। डॉ हीरा लाल शास्त्री का मत इससे भिन्न है उनका मानना है कि प्रेमाख्यान परम्परा पूर्णतः भारतीय परम्परा है और यह वैदिक युग से चली आ रही है।

ऋग्वेद् में उर्वशी–पुरूरवा यमयमी संवाद आदि प्रेमाख्यान मिलते हैं।उपनिषदों में याज्ञवल्क्य–गार्गी इन्द्र–आहिल्या आख्यान मिलते हैं। महाभारत के अतिरिक्त संस्कृत में कादम्बरी अभिज्ञान शाकुन्तलम् विक्रमोर्वशीय वासवदत्ता मालती माधव आदि अनेक प्रेमाख्यानों की रचना हुई।यहां अन्तर केवल इतना है कि भारतीय प्रेमाख्यानों में लौकिक प्रेम की अभिव्यंजना हुई है जबकि सूफी प्रेमाख्यानों में लौकिक प्रेम के साथ साथ अलौकिक प्रेम की भी अभिव्यंजनां हुई है। अपभ्रंश के चरित काव्यों में भी प्रेम का स्वरूप कुछ अलग प्रकार का है।इनमें प्रेम लौकिक होता है तथा बाद में प्रेमी प्रिया को छोड कर तपस्वी और योगी बन जाता है।यह प्रेम भी सूफी प्रेमाख्यानों से अलग प्रकार का है।

आदिकालीन प्रेमाख्यानों में लौकिक श्रृंगार का वर्णन प्रमुखता से किया गया है तथा नायक को प्रधानता दी गई है।इन रचनाओं में लौकिक प्रेम कथा कहना ही रचनाकार का उद्देश्य रहा है। सभी रचनाकार हिन्दु धर्मावलम्बी थे।

सूफी प्रेमाख्यानक रचनाओं में चन्दायन मृगाावती पद्मावत मधुमालती चित्रावली युसुफ जुलेखां आदि रचनाएं प्रंमुख हैं। इनमें श्रृंगार रस के साथ साथ शान्त रस की भी चर्चा भी हुई है।ये सभी नायिका प्रधान रचनाएं हैं तथा नायिका को ईश्वर का रूप माना गया है। इनमें लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना की गई है।

भारतीय सूफी कवियों ने लौकिक प्रेमाख्यान परम्परा का मिश्रण करके एक नवीन प्रेमाख्यान परम्परा को जन्म दिया। इस परम्परा का प्रथम ग्रंथ मुल्ला दाउद द्वारा रचित चन्दायन है।इसके प्रेमाख्यान में नूरक और चन्दा की प्रेम कथा का वर्णन किया गया है।इसके अतिरिक्त कुतुबन की मृगावती तथा मंझन की मधुमालती विशेषतः उल्लेख्य हैं।

सोलहवीं शताब्दी में हिन्दी का प्रमुख प्रेमाख्यानक काव्य पद्मावत् रचा गया इसे भाव एवं भाषा की दृष्टि से अद्वितीय रचना कहा जा सकता है। पद्मावत की प्रमुखता इससे स्वयं झलकती है क्योकि पद्मावत ने अपने परवर्ती सभी प्रेमाख्यान रचनाओं को अत्यधिक प्रभावित किया।

सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में जायसी कृत पद्मावत सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रेमाख्यानक है। पद्मावत को प्रेमाख्यानकों का शिरोमणि कहा जा सकता है।पद्मावत उपसंहार के अतिरिक्त 57 खण्डों में विभक्त एक विशाल ग्रन्थ है। इसके पूर्वार्द्ध की कथा काल्पनिक तथा उत्तरार्द्ध की कथा ऐतिहासिकता का पुट लिए हुए है।नायक रत्नसेन की तुलना में नायिका पद्मावती को अधिक महत्व दिया गया है। पद्मावत के माध्यम से कवि ने प्रतीक रूप से सूफी साधना पर प्रकाश डाला है। कवि पद्मावती को ईश्वर का रूप मानता है–

प्रथम सो जोति गगन निरमई पुनि सो पिता माथे मनि भई। [1]
पुनि वह जोति मातु घर आई तेहि ओसर आदर बहु पाई।।

जायसी ने पद्मावत के मानसरोदक खंड में कवि ने सखियों के वार्तालाप द्वारा आध्यात्मिक संकेत भी दिए है।

ऐ रानी मन देखु विचारी । एहि मैहर रहना दिन चारी। [2]
जौ लहि अहै पिता कर काजू। खेलि लेहु जौं खेलहु आजु।
पुनि सासुर हम गौनब काली। कित हम कित एह सरवर पाली।
कित आवन पुनि अपने हाथा। कित मिलि कै खेलब एक साथा।
सासु ननद बोलिन्ह जिउ लेही। दारुन ससुर न आवै देही ।
पिउ पिआर सब उपर सो पुनि करै दंह काह ।
कहु सुख राखै की दुख दुहुं कस जनम निबाह ।

मानसरोदक खंड में कवि ने पद्मावत की अलौकिकता को अत्यधिक उभारा है। जायसी का उदाहरण द्रष्टव्य है–

सर वर रूप विमोहा हिये हिलोरइ लई। [3]
पांव छुवै मकु पावै यहि मिस लहरहिं लेई।

पद्मावत के पूर्वार्द्ध में सूफी साधना पद्धति के अनुसार सारी कहानी प्रतीक रूप में प्रस्तुत की गई है। रत्न सेन एक साधक है और पद्मावती एक आध्यात्मिक शक्ति है जिसे प्राप्त करने के लिए रत्नसेन अनेक कठिनाइयों को झेलता है। इस भाग में हीरा मन तोते को अत्यधिक महत्व दिया गया है। पद्मावती के सौंदर्य का वर्णन रत्न सेन के समक्ष यही करता है। बाद में नागमति का त्याग ,साधु वेश धारण करने का उल्लेख एवं सिंहल द्वीप प्रस्थान बडा ही मार्मिक है।अन्ततः शिव की सहायता से रत्नसेन का विवाह पद्मावती से हो जाता है ।राजा नागमती का विरह संदेश पाकर पद्मावती कें साथ चितौडगढ लौट आता है । इस पूर्वार्द्ध भाग में सूफी साधना के अनुरूप ही सभी प्रतीक जुटाए गए है [4]।

पदमावत का उत्तरार्द्ध ऐतिहासिक कहा जा सकता है। कुछ काल्पनिक पात्रों का भी सहारा लेकर महाकाव्य में प्रभावोत्पादकता की व्यवस्था की गई है। दिल्ली का सुलतान अलाउद्दीन खिलजी राघवचेतन के मुखसे

पदमावती के सौंदर्य का वर्णन सुनकर चितौड पर हमला कर देता है। छलकपटसे रत्नसेन को बन्दी बना लिया जाता है उसके उपरान्त रत्नसेन को भी इसी तरह छुडाया जाता है। गोरा बादल के अपूर्व सौंदर्य का वर्णन अत्यन्त सुन्दर है। रत्न सेन और देवपाल के परस्पर युद्ध में दोनों एक दूसरे को मार देते हैं। पदमावती और नागमती रत्नसेन के शव के साथ सती हो जाती हैं। अलाउद्दीन के हाथ पदमावती की राख मात्र लगती है ।राख को मुट्ठी में भरकर उडाता हुआ अलाउददीन कह उठता है कि यह संसार मिथ्या है।

इस तरह पदमावत में सूफी प्रेमाख्यानक काव्य के वे सब गुण विद्यमान हैं जिनके लिए सूफी प्रेमाख्यानकों की हिन्दी साहित्य में एक अलग पहचान है।इसमें प्रेम की पराकाष्ठा कों चित्रित किया गयाहै। प्रेम की सुन्दर व्यंजना हुई है। कवि ने रत्नसेन और पदमावती के प्रेम की अमर कथा का वर्णन करते हुए लौकिक प्रेम द्वारा अलौकिक प्रेम की व्यंजना की है। इसी लिए कुछ विद्वान इसे अन्योक्ति काव्य कहते हैं तो कुछ समासोक्ति काव्य कहते हैं। यह सूफी महाकाव्य एक महान प्रेमाख्यानक काव्य है जिसका प्रमुख प्रतिपाद्य प्रेम है। नागमती के प्रेम में एक विशेष मार्मिकता देखी जा सकती है। नागमती के प्रेम में असाधारण संवेदनशीलता है जो कि पाठक में भी करुणा उत्पन्न कर देती है। पदमावत से एक उदाहरण देखिए–

दहि कोइल भई कंत सनेहा । तोला मांसु रहा नहिं देहा। [5]
रकत न रहा विरह तन जरा । रती रती होई नैनन्हिं ढरा।

य़द्यपि पद्मावत में वीर करुण वात्सल्य आदि रसों का यथा स्थान प्रयोग हुआ है परन्तु श्रृंगार ही इस काव्य का प्रधान रस है। जायसी ने पद्मावत में श्रृंगार के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का बराबर वर्णन किया है। संयोग का चित्रण रत्न सेन नागमती तथा पद्मावती के द्वारा किया गया है । वियोग वर्णन में कवि को विशेष सफलता मिली है। नागमती का विरह और कवि द्वारा वर्णित बारहमासा आदि का वर्णन बडा ही अनूठा है। वियोग वर्णन में सम्भवतः जायसी अधिक सफलता मिली हैं पद्मावती में नागमती का विरह वर्णन हिन्दी साहित्य में अलौकिक एवं अद्वितीय है।एक उदाहरण देखिए–

सुआ काल होइ लेइगा पीउ। पिउ नहिं जात रात बरु जीउ। [6]
भएउ नारायण बाबन करा। राज करत राजा बलि छरा ।।

ठसी तरह प्रकृति वर्णन में भी जायसी अद्वितीय हैं।प्रकृति के आलम्बन उद्दीपन मानवीकरण अलंकरण आदि सभी रूपों का सफलता पूर्वक वर्णन किया हैं। उन्होंने एक ओर वन नदी पर्वत सूर्य चांद आकाश तथा वृक्षों का वर्णन किया है वहीं दूसरी ओर गांव नगर रणसज्जा सेना का प्रस्थान जलक्रेलि आदि का भी बहुत सुंन्दर वर्णन किया है।

कीन्हेसि हेवैं समुद्र अपारा । कीन्हेसि मेरु खिखिद पहारा। [7]
कीन्हेसि नदी नार औ झरना। कीन्हेसि नगर मच्छ बहु बरना।
कीन्हेसि सीप मोति बहु भरे । कीन्हेसि बहुतइ नग निरमरे ।।

जायसी अद्भुत कवि हैं तथा प्रेमाख्यानक परम्परा में पद्मावत का स्थान सर्वोपरि है क्योंकि इसमें सूफी साधना की प्रतीकात्मकता का सफलता पूर्वक निर्वाह हुआ है। चन्दायन और मृगावती में जो त्रुटियां थीं वे सभी इसमें दूर की गई है। [8] पद्मावत वास्तव में भारतीय लोक संस्कृति और लोक जीवन का महाकाव्य है। जायसी ने एक और उपक्रम किया है उन्होंने कबीर के खंडनात्मक स्वर को नकारते हुए मंडनात्मक स्वर को अपनाया तथा हिन्दुओं और मुसलमानो के अजनबीपन को दूर कर एक दूसरे के समीप लाने का स्तुत्य प्रयास किया। इसके अतिरिक्त जायसी ने ग्रामीण संस्कृति पर्वों त्योहारों आादर्शों का खुलकर वर्णन किया।

पद्मावत का भाव एवं कला पक्ष दोनों एक समान सबल हैं।इसकी भाषा बोलचाल की अवधी हैजिसमें मुहावरों तथा लोकोक्तियों का भरपूर वर्णन किया गया है। [9] काव्य में अनायास ही यत्र तत्र उपमा रूपक उत्प्रेक्षा अतिशयोक्ति दृष्टान्त समासोक्ति अन्योक्ति आदि अलंकारों का खुल कर प्रयोग किया गया है। जायसी की हिन्दी साहित्य को यह देन है कि उत्होंने परवर्ती सूफी कवियों को अत्यधिक प्रभावित किया

पद्मावत एक ओर प्रतीकात्मक रूप में सूफी –साधना को अभिव्यंजित किया वहीं दूसरी ओर ऐतिहासिक पुट द्वारा इसकी रोचकता में अभिवृद्धि हुई है। [10]जायसी असाधारण कवि थे उनमें महाकवियों जैसी उदात्त प्रतिभा भी विद्यमान थी जिसके कारण

उनकी रचना काव्य गुणों की दृष्टि से भी अद्वितीय बनी है।यही कारण है कि प्रेमाख्यान परम्परा में पद्मावत का स्थान सर्वोपरि है।

सन्दर्भ सूचि

1. जायसी ग्रंथावली – सम्पादक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. मानसरोदक खण्ड – चौपाई–02
3. मानसरोदक खण्ड – चौपाई –04
4. जायसी ग्रंथावली – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
5. राजा सुआ संवाद – चौपाई –14
6. नागमती सुआ संवाद – चौपाई –08
7. स्तुति खण्ड – 02
8. जायसी ग्रंथावली – संपादक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृ 112
9. उपरोक्त – उपरिवत
10. उपरिवत – पृ 86